

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 28, ईश्वर के लोगों की आज्ञाकारिता

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 28 है, ईश्वर के लोगों की आज्ञाकारिता।

पिछले कुछ सत्रों में हम जो करना चाहते हैं, वह है आज्ञाकारिता के विषय पर विचार करना और यह देखना कि यह ईश्वर के लोगों के जीवन में कैसे काम करता है, जैसे कि आज्ञाकारिता और ईश्वर के लोग।

हम दो सत्र करेंगे, जहाँ हम आज्ञाकारिता के व्यापक विषय पर विचार करेंगे, जो परमेश्वर के लोगों द्वारा उनके लिए किए गए उनके अनुग्रहपूर्ण कार्यों के प्रति प्रतिक्रिया है, विशेष रूप से मसीह के प्रकाश में, और फिर एक खंड जहाँ हम बहुत ही जटिल विषय पर कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करेंगे, और वह है पुराने नियम के कानून के साथ मसीहियों का संबंध। जब हम आज्ञाकारिता और परमेश्वर के लोगों की प्रतिक्रिया के संदर्भ में सोचते हैं, तो पुराने नियम के कानून की इसमें क्या भूमिका है? और फिर, मैं अपने अंतिम सत्र के लिए जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि हम दो अंशों को देखकर समाप्त करेंगे। वास्तव में, ये दो पाठ जिनका हमने अन्य विषयों के संबंध में कई अवसरों पर उल्लेख किया है, और जो मैं करना चाहता हूँ, वह है उन अंशों पर फिर से विस्तार से काम करना और यह प्रदर्शित करना कि कैसे एक बाइबिल धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण उन पाठों को प्रकाशित करता है और कैसे वे पाठ बाइबिल धर्मशास्त्र में योगदान करते हैं। हम जो कुछ भी कहेंगे, उसमें से अधिकांश कुछ नया नहीं होगा, बल्कि हम केवल कुछ सूत्रों, विषयों और धारणाओं को एक साथ लाएंगे, जिनका उल्लेख हमने इस पाठ्यक्रम के दौरान अन्यत्र किया है, और उन सभी को एक साथ लाकर इन अनुच्छेदों को समझने का प्रयास करेंगे तथा हमें दिखाएंगे कि किस प्रकार बाइबल आधारित धर्मशास्त्र, पाठों को समझने के लिए मूल्यवान है, तथा किस प्रकार पाठ, बाइबल आधारित धर्मशास्त्र के निर्माण में योगदान देते हैं और हमें मार्गदर्शन देते हैं।

लेकिन सबसे पहले, मैं परमेश्वर के लोगों की आज्ञाकारिता के विषय पर विचार करना चाहता हूँ। पुराने और नए नियम में सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है विश्वास का विषय। विश्वास परमेश्वर के लोगों की उनके उद्धार के लिए परमेश्वर के प्रावधान के प्रति उचित प्रतिक्रिया है जो अब, नए नियम में, यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरी हो गई है।

इसलिए, विश्वास का मतलब है परमेश्वर के वादों पर भरोसा करना। यह हमारे उद्धार के प्रावधान के लिए यीशु की अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान पर भरोसा करना है। कम से कम पौलुस के पत्रों में, शायद इसका सबसे आम और सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति इफिसियों अध्याय 2 और श्लोक 8 और 9 में पाई जाती है, क्योंकि यह अनुग्रह से है कि आप विश्वास के माध्यम से बचाए गए हैं।

और यह तुम्हारी ओर से नहीं है। यह परमेश्वर का दान है। यह कर्मों के कारण नहीं है, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

इसलिए, यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार के परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रावधान के लिए विश्वास ही एकमात्र उचित प्रतिक्रिया है। पौलुस इसकी तुलना हमारे अपने कार्यों से करता है, जो हमें अपनी उपलब्धियों पर गर्व करने में सक्षम बनाते हैं। लेकिन इसके बजाय, यीशु मसीह के प्रति विश्वास की प्रतिक्रिया के माध्यम से उद्धार के परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रावधानों को अपनाने का एकमात्र तरीका विश्वास ही है।

फिर भी हम देखेंगे कि, नए नियम में, विश्वास कभी भी विपरीत नहीं होता है और हमेशा परमेश्वर के लोगों द्वारा आज्ञाकारिता और अच्छे कार्यों के साथ होता है। पुराने नियम में शुरू करते हुए, हम इसे देखते हैं। परमेश्वर की आज्ञाएँ, विशेष रूप से उसके पुराने नियम के कानून के माध्यम से, परमेश्वर की इच्छा मुख्य रूप से उस कानून के माध्यम से संप्रेषित होती है जिसे उसने मूसा को और अपने लोगों को अनुग्रहपूर्वक दिया है।

हालाँकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम में भी, कानून परमेश्वर की कृपा और परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रावधान पर निर्भरता से अलग नहीं है। इसलिए, यदि आप निर्गमन अध्याय 20 पर वापस जाते हैं, तो परमेश्वर द्वारा मूसा को दस आज्ञाएँ, दस आज्ञाएँ और अपना कानून देने की शुरुआत में, निर्गमन अध्याय 20 में, हम पाते हैं कि परमेश्वर द्वारा ऐसा करने और परमेश्वर के लोगों के लिए अपनी आवश्यकताओं को स्पष्ट करने से पहले, अध्याय 20 शुरू होता है, और परमेश्वर ने ये सभी शब्द कहे, मैं तुम्हारा परमेश्वर यही हूँ जो तुम्हें मिस्र से, दासता की भूमि से बाहर लाया। फिर, इसके बाद उन आज्ञाओं की सूची दी गई है जो परमेश्वर अपने लोगों को देता है।

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर द्वारा व्यवस्था देना उसके छुटकारे के पिछले कार्य, अपने लोगों के लिए उसके पिछले प्रावधान, इस तथ्य पर निर्भर करता है कि वह उनका परमेश्वर है और उन्हें उसके लोग होना चाहिए, और अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाने के उसके पिछले कार्य पर। इसलिए, एक बार फिर, व्यवस्था ऐसी चीज़ के रूप में नहीं दी गई है जो परमेश्वर के अनुग्रह और आशीर्वाद के योग्य हो; इसके बजाय, व्यवस्था परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के लिए पहले से किए गए कार्यों की प्रतिक्रिया है। हम नई वाचा के ढाँचे के भीतर आज्ञाकारिता और आज्ञाकारिता को समझने के महत्व को भी देखते हैं।

मैं इस समय उन ग्रंथों को फिर से नहीं पढ़ूँगा, लेकिन यहजेकेल, विशेष रूप से यिर्मयाह अध्याय 31, और परमेश्वर का वादा कि वह उनके हृदय पर कानून लिखेगा ताकि वे इसे बनाए रखें और इसका पालन करें। यहजेकेल अध्याय 36 भी वह जगह है जहाँ परमेश्वर ने उन्हें एक नया हृदय देने के लिए अपनी आत्मा को उन पर उंडेलने का वादा किया है, जिससे वे परमेश्वर के कानून के प्रति आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया करने में सक्षम हो सकें। इसलिए यिर्मयाह और यहजेकेल में नई वाचा के वादे, मुझे लगता है, नए नियम को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे एक ऐसे समय की आशा करते हैं जब परमेश्वर अपनी आत्मा को उंडेलेगा, जब वह अपने लोगों के हृदय पर अपना कानून लिखेगा, जिससे वे उसकी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम होंगे।

और इसलिए, हम नए नियम में देखेंगे कि चूंकि नई वाचा का स्पष्ट रूप से उद्घाटन किया गया है, हमने इब्रानियों और यहां तक कि पॉल, पॉलिन साहित्य और अन्य जगहों पर, सुसमाचारों के संदर्भ में देखा जहां यीशु अपनी मृत्यु के माध्यम से स्पष्ट रूप से नई वाचा का उद्घाटन करते हैं, नई वाचा अपने साथ यह वादा करती है कि परमेश्वर उनके हृदयों पर अपना नियम लिखेगा और अपनी आत्मा उंडेलेगा, जिससे वे उसकी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम होंगे। तो फिर, जब हम नए नियम में आते हैं, तो नए नियम में, हम पाते हैं कि जो लोग अपने पुत्र, यीशु मसीह, और उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के लिए परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रावधान पर विश्वास में प्रतिक्रिया करते हैं, वे भी आज्ञाकारिता और एक परिवर्तित जीवन के साथ प्रतिक्रिया करेंगे। तो फिर, हम नए नियम में पाते हैं कि विश्वास और एक परिवर्तित जीवन एक दूसरे के विपरीत नहीं हैं, बल्कि एक दूसरे के साथ हैं और उन्हें अलग नहीं किया जा सकता है।

तब एक परिवर्तित जीवन यीशु मसीह में परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रावधान द्वारा सक्षम और प्रेरित होता है, जो कि परमेश्वर ने मसीह यीशु में अपने लोगों के लिए किया है। हम इसे पहले से ही देखना शुरू कर देते हैं, उदाहरण के लिए, मरकुस के अध्याय 1 और पद 15 में सुसमाचारों में और अन्य सुसमाचारों में भी समानताएँ। मरकुस के अध्याय 1, पद 15 में, यीशु की सेवकाई की शुरुआत में, हम पद 14 पाते हैं, जिसमें कहा गया है कि यूहन्ना को जेल में डाल दिए जाने के बाद, यीशु परमेश्वर की खुशखबरी का प्रचार करते हुए गलील में गए।

उन्होंने कहा, समय आ गया है, परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है। पश्चाताप करो और खुशखबरी पर विश्वास करो। तो, विश्वास और पश्चाताप के संयोजन पर ध्यान दें।

मसीह में विश्वास का अर्थ बुराई से दूर हो जाना, पाप से दूर हो जाना और आज्ञाकारिता में विश्वास के साथ यीशु मसीह को गले लगाना भी है। वास्तव में, थॉमस श्राइनर अपने नए नियम के धर्मशास्त्र में कहते हैं कि यह अकल्पनीय है कि यीशु के साथ नया रिश्ता जीवन-परिवर्तन से कम कुछ भी नहीं होगा। और मैं पूरी तरह से सहमत हूँ।

इसलिए, यीशु परमेश्वर के राज्य की पेशकश करने के लिए आते हैं, लेकिन इसके लिए विश्वास की प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है, साथ ही पश्चाताप या पाप से दूर होने की प्रतिक्रिया की भी आवश्यकता होती है। इसलिए, हम विश्वास के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया के संबंध में आज्ञाकारिता के महत्व को देखते हैं। मसीह में विश्वास पाप से दूर होकर उसकी ओर मुड़ने को लाता है।

उदाहरण के लिए, हम मत्ती अध्याय 25 में देखते हैं, मैं यह पाठ नहीं पढ़ूंगा, लेकिन मत्ती अध्याय 25 के अंत में, भेड़ और बकरियों का तथाकथित दृष्टांत है, जहाँ एक दृष्टांत संभवतः परमेश्वर के अपने लोगों के भविष्य के न्याय का उल्लेख करता है, जो पूरी तरह से उनकी आज्ञाकारिता पर आधारित है, जो उनके कार्यों पर आधारित है, और यह इस बात का मानदंड बन जाता है कि वे परमेश्वर के भविष्य के राज्य में प्रवेश करेंगे या नहीं। हम अन्यत्र, लूका अध्याय 8, श्लोक 11-15 में कई संदर्भ देखते हैं, जहाँ फल देना, एक बार फिर, फल देना न्याय के दिन मुक्त होने का मानदंड है। और हम सुसमाचारों के माध्यम से इसके अन्य उदाहरण पाते हैं, जहाँ यीशु अपेक्षा करते हैं

कि उनके अनुयायी एक परिवर्तित जीवन और आज्ञाकारिता के द्वारा उनमें विश्वास और पश्चाताप प्रदर्शित करेंगे।

संभवतः इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण यीशु के पहाड़ी उपदेश में पाया जाता है, और हम मैथ्यू के संस्करण को मैथ्यू अध्याय 5-7 में देखेंगे। लेकिन पहाड़ी उपदेश संभवतः सबसे महत्वपूर्ण और कम से कम सबसे पूर्ण उदाहरण है, एक अर्थ में, और यीशु की नैतिक शिक्षा और उनके लोगों से उनकी अपेक्षाओं का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण और सबसे पूर्ण उदाहरण है। और पहाड़ी उपदेश को समझने के अलग-अलग तरीके हैं जो हमें मैथ्यू 5-7 में मिलते हैं, और फिर आप इसे ल्यूक के सुसमाचार में भी पाते हैं।

मैथ्यू के पास एक विस्तृत और विस्तृत विवरण है, लेकिन संभवतः दोनों एक ही उपदेश हैं। प्रत्येक लेखक यीशु के पहाड़ी उपदेश के अपने विवरण में अलग-अलग बातों पर जोर देता है। लेकिन पहाड़ी उपदेश को चर्च के इतिहास में अलग-अलग तरीकों से समझा गया है। कुछ लोगों ने उपदेश को समाज को बदलने के लिए एक नैतिकता के रूप में समझा है, इसलिए यह कुछ ऐसा है जिसे लागू किया जाना चाहिए और हमारे समाज में बदलाव और परिवर्तन लाने के लिए इसे लागू किया जाना चाहिए।

इसमें कठिनाई यह है कि हम एक पल में ही देख लेंगे कि यीशु स्पष्ट रूप से न केवल सामान्य समाज को बल्कि अपने अनुयायियों को भी संबोधित कर रहे हैं। और खास तौर पर जब हम उन धन्य वचनों को देखते हैं जो शुरू होते हैं, धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं, आदि। जब हम एक पल में उन पर गौर करते हैं, तो हम देखेंगे कि यीशु के मन में एक विशिष्ट व्यक्ति या विशिष्ट लोग हैं जो पहाड़ी उपदेश को अमल में लाएंगे।

इसलिए, मुझे ऐसा नहीं लगता कि धर्मोपदेश मुख्य रूप से समाज के लिए एक नैतिकता है, बल्कि यह यीशु मसीह के साथ एक संबंध मानता है, कि यह उनके अनुयायी हैं जो इसे व्यवहार में लाएंगे। एक और आम दृष्टिकोण की वकालत की गई, विशेष रूप से मार्टिन लूथर द्वारा, यह था कि पर्वत पर उपदेश मुख्य रूप से हमें यह दिखाने के लिए है कि हम कितने कम हैं, हमें हमारी पापपूर्णता दिखाने के लिए, और हमें यह दिखाने के लिए कि हम कानून का पालन नहीं कर सकते हैं, और हमें यह दिखाने के लिए कि हम नैतिक रूप से दिवालिया हैं, और इसलिए हमें मसीह की ओर ले जाने के लिए, हमें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता दिखाने के लिए, और हमें ईश्वर की कृपा पर पूरी तरह से भरोसा करने के लिए प्रेरित करने के लिए। इसलिए, मैं पर्वत पर उपदेश पढ़ता हूँ, और मैं इसे व्यवहार में लाने की कोशिश करता हूँ, लेकिन यह दर्शाता है कि मैं नहीं कर सकता।

और यह सुसमाचार के लिए एक तरह की तैयारी है। अब, इसमें निश्चित रूप से कुछ सच्चाई है। जब हम फिर से आनंदमय वचनों को देखेंगे तो हम देखेंगे कि इसमें कुछ सच्चाई है।

लेकिन एक बार फिर, मैथ्यू ने इतने लंबे समय में पर्वत पर उपदेश की संपूर्णता को रिकॉर्ड करके, यह सोचना मुश्किल है कि मैथ्यू यह सब रिकॉर्ड करेगा और कुछ हद तक यह उम्मीद नहीं करेगा कि यह यीशु का निर्देश था, कि वह लोगों से वास्तव में पालन करने की अपेक्षा करता

था, और सोचता था कि वे वास्तव में इसे कुछ हद तक अभ्यास में ला सकते हैं। यह केवल सुसमाचार के लिए तैयारी या मुझे यह दिखाने से कहीं अधिक है कि मैं कितना असफल हूँ और मुझे उद्धारकर्ता की कितनी आवश्यकता है। इसलिए, तीसरा, मुझे लगता है कि पर्वत पर उपदेश को देखने का सबसे अच्छा तरीका इसे राज्य के लिए एक नैतिकता के रूप में देखना है।

यह परमेश्वर के लोगों के लिए एक वास्तविक नैतिकता है जो परमेश्वर के राज्य से संबंधित हैं, और फिर से, यदि आप इसे मत्ती 3 और 4 के संदर्भ में रखते हैं, तो यीशु परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के लिए आते हैं, और यीशु अब न केवल उन लोगों को राज्य प्रदान करने के लिए आते हैं जो विश्वास करेंगे और पश्चाताप करेंगे और विश्वास में उनके प्रति प्रतिक्रिया करेंगे, बल्कि अब अपने लोगों को यह भी निर्देश देने के लिए आते हैं कि वे कैसे जीवन जिएँ जैसे कि वे राज्य के सदस्य हैं। यीशु अपने अनुयायियों को सिखाते हैं कि उन लोगों से क्या अपेक्षित है जो राज्य, परमेश्वर के शासन में प्रवेश करेंगे।

हमें शायद राज्य, या पहाड़ी उपदेश को भी समझना चाहिए, और यहाँ फिर से हमारा प्रसिद्ध वाक्यांश है: पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं तनाव। अर्थात्, यीशु को उम्मीद है कि पहाड़ी उपदेश लोगों के जीवन में पहले से ही एक वास्तविकता बन सकता है। वह उम्मीद करता है कि परमेश्वर के लोग, कुछ हद तक, पहाड़ी उपदेश की माँगों का पालन करने में सक्षम होंगे।

हालाँकि आने वाले राज्य तक यह पूरी तरह से साकार नहीं हुआ है, इसलिए, मुझे लगता है कि हमें पर्वत पर उपदेश को परमेश्वर के लोगों के लिए एक वास्तविक नैतिकता के रूप में पढ़ने की ज़रूरत है, जिन्होंने परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया है, कि यीशु अपने अनुयायियों से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने जीवन को पर्वत पर उपदेश में पाए गए उनके निर्देशों के अनुरूप बनाएँ। अब, उपदेश को और अधिक समझने के लिए, मुझे लगता है कि हमें इसके आरंभ में दिए गए आनंदमय वचनों पर वापस जाने की ज़रूरत है, जो मुझे लगता है कि इसे समझने के लिए एक संदर्भ प्रदान करते हैं।

और साथ ही, हमें इसे मैथ्यू के अध्याय 3 और 4 में जो कुछ हो रहा है, उसके संदर्भ में अधिक सामान्य रूप से रखना चाहिए। जब आप मैथ्यू 5 और श्लोक 3-11 में आनंद के साथ शुरू करते हैं, तो यह दिलचस्प है कि यीशु अपने लोगों को यह निर्देश देने से पहले कि उन्हें परमेश्वर के राज्य के हिस्से के रूप में जीवन कैसे जीना है, उनसे क्या अपेक्षित है, उन लोगों से क्या नैतिकता अपेक्षित है जो परमेश्वर के राज्य के शासन के अधीन आएंगे, वह उन लोगों का वर्णन करके शुरू करता है जो पहाड़ी उपदेश को अमल में लाएंगे, और वे लोग जिन्हें वह संबोधित कर रहे हैं। और मुझे इनमें से कुछ पर नज़र डालने दीजिए।

इसकी शुरुआत होती है, धन्य हैं वे जो मन से दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनका है। और फिर, धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि उन्हें सात्वना मिलेगी। धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के वारिस होंगे।

धन्य हैं वे जो धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त होंगे। अब, मैं यहीं उन पर बात करना बंद कर देता हूँ। सबसे पहले, ध्यान दें कि मैथ्यू और यीशु ने यह कहकर शुरुआत की, धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं।

दूसरे शब्दों में, यीशु उस व्यक्ति पर आशीर्वाद देते हैं जो आत्मा में गरीब है या जो अपने नैतिक दिवालियापन को पहचानता है। जो आत्मा में गरीब है उसके पास परमेश्वर को देने के लिए कुछ भी नहीं है। जो आत्मा में गरीब है वह परमेश्वर के सामने आध्यात्मिक रूप से खाली या आध्यात्मिक रूप से दिवालिया है।

और फिर, धन्य हैं वे जो शोक करते हैं। यहाँ शोक का अर्थ दुख नहीं है, दर्द के कारण, या किसी प्रियजन के खोने के कारण दुख, या इसलिए दुख कि मैंने अपनी नौकरी खो दी, या जीवन बस दयनीय है, और मेरे जीवन में दर्द है, और इस तरह की चीजें। लेकिन यहाँ शोक, पुराने नियम की पृष्ठभूमि के प्रकाश में, पाप के लिए शोक है।

यह पश्चाताप का संकेत है। इसलिए, जो व्यक्ति आत्मा में गरीब है, जो परमेश्वर के सामने आध्यात्मिक रूप से दिवालिया है और परमेश्वर के सामने खाली है, वह अपने जीवन में पाप के कारण पश्चाताप में विलाप करता है। और शायद दुनिया में पाप और अन्याय के कारण भी।

और यह उस व्यक्ति को शोक करने का कारण बनता है। और फिर श्लोक 6 आगे आता है। तब धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएँगे।

वे लोग जो धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं, जिसे हम पर्वत पर उपदेश के बाकी हिस्सों में वर्णित पाते हैं। वे लोग जो दुनिया में न्याय और धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं, अपने स्वयं के जीवन में, अपने आध्यात्मिक दिवालियापन के कारण, क्योंकि वे अब दुनिया में और अपने स्वयं के जीवन में पाप के लिए शोक करते हैं, अब वे धार्मिकता और न्याय के लिए भूखे और प्यासे हैं, और भगवान उन्हें भरते हैं। तो अंततः, फिर, पर्वत पर उपदेश की नैतिकता कुछ ऐसी चीज है जिसे केवल वे ही पूरा कर सकते हैं जो भगवान के सामने पश्चाताप में आते हैं, और जो आध्यात्मिक रूप से अपने दिवालियापन को पहचानते हैं, और कानून को बनाए रखने और भगवान की अपेक्षाओं को पूरा करने में अपनी असमर्थता को पहचानते हैं, और इसके बजाय, वे धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं जिससे भगवान खुद उन्हें भर देंगे।

इसलिए माउंट पर उपदेश कहीं अधिक है और इसे इस दृष्टिकोण से दूर रखा जाना चाहिए कि किसी तरह यह एक काम किया हुआ धार्मिकता है जिसके बारे में हम माउंट पर उपदेश में पढ़ते हैं। मुझे लगता है कि यह मार्टिन लूथर और अन्य लोग थे जो आश्चर्य थे कि माउंट पर उपदेश में कोई सुसमाचार नहीं था। मैं इससे असहमत हूँ।

जब आप धन्य वचनों को पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट रूप से सुसमाचार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता हुआ प्रतीत होता है। पर्वत पर उपदेश के जीवन को जीने का एकमात्र तरीका यह है कि हम परमेश्वर की कृपा और क्षमा की आवश्यकता को पहचानें और पर्वत पर उपदेश को व्यवहार में लाने के लिए उसकी क्षमता और सक्षम शक्ति को पहचानें, ताकि परमेश्वर के

राज्य की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। इसके अलावा, मुझे लगता है कि पर्वत पर उपदेश को समझना महत्वपूर्ण है, और हम सभी विवरणों को देखने नहीं जा रहे हैं।

मैं सिर्फ उपदेश को सामान्य रूप से देख रहा हूँ। आप इसे कुछ ही मिनटों में पढ़ सकते हैं। लेकिन इसके बजाय, मैं इसे एक बार फिर इसके संदर्भ में रखना चाहता हूँ, और वह है पहाड़ी उपदेश, जो परमेश्वर के राज्य के आगमन के संदर्भ में है।

वास्तव में, पहले आशीर्वाद में, धन्य हैं वे जो मन में दीन हैं, क्योंकि उनका राज्य है। स्वर्ग का राज्य उनका है। और फिर हम अध्याय 4 में पाते हैं कि यीशु राज्य के कार्य करने के लिए आते हैं, चंगाई के द्वारा, लेकिन साथ ही परमेश्वर के राज्य की शिक्षा देने, घोषणा करने और प्रचार करने के लिए भी।

इसलिए, मत्ती अध्याय 5-7, पर्वत पर उपदेश, परमेश्वर के राज्य के आगमन की कल्पना करता है। अर्थात्, पर्वत पर उपदेश केवल परमेश्वर के राज्य की परिवर्तनकारी शक्ति के भीतर और उसके अधीन ही किया जा सकता है। पर्वत पर उपदेश द्वारा मांगे गए जीवन को जीने के लिए परमेश्वर के राज्य की शक्ति एक शर्त है।

तो फिर, यह धार्मिकता का काम नहीं है, कुछ ऐसा जो यीशु हमसे करने के लिए कह रहे हैं। लेकिन अब, ईश्वर की कृपा से बचाए गए मसीहियों के रूप में, हमें उपदेश पर उतना ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है, न ही यह केवल हमें हमारे पाप और उद्धारकर्ता की ज़रूरत दिखाने के लिए है। हाँ, यह ऐसा करता है।

लेकिन अंततः, पहाड़ी उपदेश अपनी शर्त के रूप में परमेश्वर के राज्य की परिवर्तनकारी शक्ति को मानता है ताकि इसे व्यवहार में लाया जा सके। पौलुस के पत्रों पर विशेष रूप से नज़र डालने से पहले बस कुछ अन्य संदर्भ और वे आज्ञाकारिता और मसीह में परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रावधान के प्रति आज्ञाकारिता की प्रतिक्रिया के बारे में क्या कहते हैं, जो मुझे लगता है कि यह वाक्यांश संक्षेप में बता सकता है। पहाड़ी उपदेश, लेकिन मुझे लगता है कि ईसाई आज्ञाकारिता के विषय की संपूर्णता, और वह ईसाई आज्ञाकारिता है, एक परिवर्तित जीवन की प्रतिक्रिया है जो यीशु मसीह में अपने लोगों के लिए परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रावधान की प्रतिक्रिया है।

दूसरे सुसमाचार की ओर बढ़ते हुए, हम रुककर देख सकते हैं और समान महत्व पा सकते हैं। लेकिन यूहन्ना अध्याय 15 यीशु द्वारा अपने लोगों को दिए गए निर्देश का एक और उदाहरण है। यूहन्ना अध्याय 15, जहाँ यीशु अपने शिष्यों को दाखलता और शाखाओं के रूपक का उपयोग करके सिखाते हैं, और हमने इसे इस संदर्भ में देखा कि यह परमेश्वर के लोगों के विषय के बारे में क्या कहता है।

लेकिन साथ ही, यीशु यह भी स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर के लोग जिस तरह का जीवन परमेश्वर चाहता है, उसे जी सकते हैं, वह केवल मसीह में बने रहने या मसीह से जुड़े रहने के द्वारा है, जो सच्ची दाखलता है। इसलिए, अध्याय 15 और पद 10 में, यीशु कहते हैं, यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसे कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और

उसके प्रेम में बना हुआ हूँ। इससे पहले, यीशु ने अध्याय 15 और पद 1 में स्पष्ट किया था कि मैं सच्ची दाखलता हूँ और मेरा पिता माली है।

वह मुझमें से हर उस शाखा को काट देता है जो फल नहीं देती, जबकि हर उस शाखा को जो फल देती है, वह छाँटता है ताकि वह और भी अधिक फलदायी हो। तुम उन वचनों के कारण पहले से ही शुद्ध हो जो मैंने तुमसे कहे हैं। मुझ में बने रहो जैसे मैं भी तुम में बना रहता हूँ।

कोई भी शाखा अपने आप फल नहीं दे सकती, उसे बेल में रहना चाहिए। न ही तुम तब तक फल दे सकते हो जब तक तुम मुझमें नहीं रहते। इसलिए, उसकी आज्ञाओं का पालन करने का एकमात्र तरीका, फल देने का एकमात्र तरीका, बेल में बने रहना और उस पर निर्भर रहना है, जो यीशु मसीह है।

इसलिए, यीशु मसीह में बने रहना फल पैदा करने और यीशु की आज्ञाओं का पालन करने के लिए एक शर्त है। प्रेरितों के काम की पुस्तक, मैं किसी एक विशिष्ट पाठ की ओर इशारा नहीं करना चाहता, लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक भी इसी तरह दर्शाती है कि उद्धार के लिए विश्वास और पश्चाताप दोनों आवश्यक हैं। इसलिए, यीशु और सुसमाचार के प्रति उचित प्रतिक्रिया विश्वास की है, लेकिन इसके साथ पश्चाताप या पाप से मुड़ना भी है।

वैसे, आप अक्सर सुनते हैं कि पश्चाताप का शाब्दिक अर्थ है अपना मन बदलना। यह बिलकुल सटीक नहीं है। नए नियम में पश्चाताप का अर्थ है अपने पूरे व्यक्तित्व को बदलना।

हां, किसी चीज के बारे में अपने मन को बदलने और जो सोचता है, उसका एक बौद्धिक घटक है, लेकिन इसके साथ ही पूरे जीवन में बदलाव और बदलाव आता है, पाप से दूर होकर और आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया करके परमेश्वर की ओर पूरी इच्छाशक्ति। इसलिए, एक तरह से, विश्वास और पश्चाताप एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए, मैं जो करना चाहता हूँ वह है पॉलिन साहित्य पर आगे बढ़ना और कई ग्रंथों को देखना जो कुछ ऐसी चीजों को और अधिक विस्तार से बताते हैं जिन्हें हम पहले ही सुसमाचारों में देख चुके हैं, लेकिन साथ ही आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया करने और यीशु मसीह में उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रावधान के जवाब में जीवन जीने की आवश्यकता भी बताते हैं।

पॉल की शिक्षा और पॉल की नैतिकता के संबंध में एक सामान्य टिप्पणी करने के लिए कुछ विशिष्ट ग्रंथों को देखने से पहले एक सामान्य टिप्पणी करने के लिए, शुरुआती बिंदु पॉल के विचार में नई वाचा के महत्व पर ध्यान आकर्षित करना है। अब, हम पहले से ही नई वाचा के विषय को देख चुके हैं, और हमने देखा है कि 2 कुरिन्थियों 3 जैसे ग्रंथों में, पापों की क्षमा के पॉल के उल्लेख में, यह तथ्य कि पवित्र आत्मा हम पर डाली गई है, कि हम आत्मा प्राप्त करते हैं और भगवान की पवित्र आत्मा में भाग लेते हैं, ये सभी नई वाचा से संबंधित हैं। इसलिए, पापों की क्षमा और आत्मा प्राप्त करना नई वाचा, यिर्मयाह 31, यहजेकेल 36 के आशीर्वाद हैं, लेकिन 2 कुरिन्थियों 3 जैसे पाठ में, पॉल और भी स्पष्ट रूप से कहते हैं कि नई वाचा यीशु मसीह में पूरी हुई है।

लेकिन मैं फिर से जिस बात पर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह यह है कि नई वाचा में, जैसा कि हम फिर से देखते हैं, विशेष रूप से यहजेकेल 36 और यिर्मयाह 31 में, नई वाचा वादा करती है कि परमेश्वर हमारे हृदयों पर अपना नियम लिखेगा। वह वादा करता है कि वह हमें एक नया हृदय देगा। वह वादा करता है कि वह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में हमें सक्षम बनाने के लिए अपनी आत्मा को हम पर उंडेलेगा।

और यही बात है जो मूसा के अधीन नई वाचा और पुरानी वाचा के बीच अंतर करती है, अब नई वाचा परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं को फिर से उनके हृदय में लिखकर, परमेश्वर द्वारा उन्हें नया हृदय देकर, उन पर अपनी आत्मा उंडेलकर रखने में सक्षम बनाती है। इसलिए, परिभाषा के अनुसार, परमेश्वर की नई वाचा के लोगों को एक परिवर्तित जीवन जीना चाहिए। ऐसा कोई भी ईसाई नहीं हो सकता जो कुछ हद तक नई वाचा के परिवर्तित जीवन को प्रतिबिंबित न करे।

क्योंकि परिभाषा के अनुसार, यदि नई वाचा का उद्घाटन हो चुका है, और मसीह में विश्वास के द्वारा, हम अब नई वाचा में भाग लेते हैं, हम अब नई वाचा के लोग हैं, और नई वाचा के हैं, यह हम में पूरी हुई है, तो परिभाषा के अनुसार, नई वाचा वादा करती है कि परमेश्वर हमारे हृदयों पर अपना नियम लिखेगा। वह हमें एक नया हृदय देगा, अपनी आत्मा उंडेलेगा, और हमें इसे बनाए रखने में सक्षम करेगा। इसलिए, यदि हम नई वाचा के अधीन रहते हैं, यदि नई वाचा मसीह में पूरी हुई है, और हमारे पास पवित्र आत्मा है, तो अनिवार्य रूप से, हम आज्ञाकारिता और अच्छे कार्यों के द्वारा, एक परिवर्तित जीवन की प्रतिक्रिया के द्वारा नई वाचा के उद्धार की वास्तविकता को प्रदर्शित करेंगे।

इसलिए, नया नियम पौलुस के, या मुझे लगता है कि पूरे नए नियम के, आज्ञाकारिता और एक परिवर्तित जीवन पर जोर को समझने के लिए महत्वपूर्ण और सार्थक है। फिर से, यह केवल सामान्य शब्दावली का उपयोग करने के लिए नहीं है; यह केवल एक सूची नहीं है, यहाँ बताया गया है कि परमेश्वर हमसे क्या करना चाहता है, और यहाँ बताया गया है कि यदि हम अच्छे ईसाई बनना चाहते हैं तो वह हमसे क्या नहीं करवाना चाहता है। लेकिन यह सब परमेश्वर के अपने लोगों के साथ नए नियम के संबंध के संदर्भ में है।

इसलिए, कुछ पाठों को थोड़ा और विस्तार से देखने के लिए, जहाँ पौलुस परमेश्वर के लोगों की यीशु मसीह के प्रति आज्ञाकारिता और परमेश्वर की आज्ञाओं और परमेश्वर की अपने लोगों से अपेक्षाओं या इच्छाओं के मुद्दे को संबोधित करता है, वह पहला, प्रारंभिक बिंदु है, गलातियों का अध्याय 5। और हम पहले ही इसे दूसरे संदर्भ में देख चुके हैं। लेकिन फिर से, गलातियों का अध्याय 5 महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परमेश्वर की नई वाचा पवित्र आत्मा या आत्मा के फल पैदा करने के संदर्भ में एक बार फिर ईसाई आज्ञाकारिता को समझता है। तो हमारे पास, इसका सबसे प्रसिद्ध हिस्सा श्लोक 22 है।

दरअसल, पद 19 और 21 के बाद, जहाँ पौलुस शरीर के कामों के बारे में बताता है, यानी, मुझे लगता है कि मेरे जो काम हैं, वे पुराने युग के हैं, जिन्हें कानून अंततः दूर नहीं कर सकता। लेकिन

अब पद 22 और 23 आत्मा के फल के बारे में बताते हैं। यानी, यह वह जीवन है जो नई वाचा की पवित्र आत्मा के अधीन जीने से उत्पन्न होता है।

लेकिन आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शांति, सहनशीलता, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और उन बातों पर संयम है जो व्यवस्था के बाहर हैं। इसलिए, दूसरे शब्दों में, धार्मिकता या एक परिवर्तित जीवन, नए नियम की पवित्र आत्मा में जीवन जीने या चलने का अपरिहार्य परिणाम है जो अब विश्वासियों पर परमेश्वर द्वारा अपनी आत्मा उंडेलने के पुराने नियम के वादों की पूर्ति में उंडेला गया है। अब, मैं इस पाठ से यह समझता हूँ कि पौलुस यह सुझाव नहीं दे रहा है कि किसी तरह, यह बस स्वचालित है और ईसाइयों पर कुछ भी करने की कोई जिम्मेदारी नहीं है।

लेकिन निश्चित रूप से, गलातियों में अपनी चर्चा के संदर्भ में, उन मसीहियों को संबोधित करते हुए जो पुराने नियम के कानून के तहत वापस जाने, पुराने नियम के कानून के अधीन होने के लिए लुभाए जाते हैं, पौलुस उन्हें याद दिलाता है कि सच्ची आज्ञाकारिता, जिसके लिए हम जिम्मेदार हैं, अंततः केवल नई वाचा की पवित्र आत्मा का परिणाम है जो हमारे अंदर डाली गई है। तो फिर, आत्मा में जीवन एक नए जीवन के मार्ग की ओर ले जाता है या परिवर्तन की ओर ले जाता है। यह दिलचस्प है, इसके बाद, गलातियों के अध्याय 6 में, हम इसके बारे में थोड़ी देर बाद बात करने के लिए वापस आएंगे, लेकिन गलातियों के अध्याय 6 में, पौलुस उन्हें कई आज्ञाएँ देने में काफी खुश है।

इसलिए वह यह कहकर शुरू करता है, भाइयो और बहनो, अगर कोई पाप में फँसा है, तो तुम जो आत्मा के द्वारा जीते हो, उसे कोमलता से सुधारो। इसलिए, आत्मा के द्वारा जीने का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर के लोग आत्मा के फल के संदर्भ में जीवन जीने की जिम्मेदारी से मुक्त हो जाएँ। पद 1 समाप्त होता है, लेकिन अपने आप को सावधान रखो, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी परीक्षा में पड़ो।

एक दूसरे का बोझ उठाओ, और इस तरह तुम मसीह के नियम को पूरा करोगे। हम इस वाक्यांश के बारे में थोड़ी देर बाद बात करेंगे। अगर कोई सोचता है कि वह कुछ है जबकि वह नहीं है, तो वह खुद को धोखा दे रहा है।

हर किसी को अपने कामों को परखना चाहिए। फिर, वे खुद पर गर्व कर सकते हैं, बिना किसी और से अपनी तुलना किए। मेरा उद्देश्य इन आज्ञाओं के बारे में विस्तार से बताना नहीं है, बल्कि बस यह ध्यान रखना है कि पवित्र आत्मा के अधीन जीवन जीने के संदर्भ में भी, जो लोग आत्मा में हैं, पौलुस उन्हें अभी भी आज्ञाएँ देता है, जिनका वह अपेक्षा करता है कि वे उनका पालन करेंगे, और उन्हें सावधान रहने की आज्ञा देता है, कहीं ऐसा न हो कि वे भी परीक्षा में पड़ जाएँ, यह सुझाव देते हुए कि वे परीक्षा में पड़ सकते हैं।

इसलिए, पौलुस ने हड्डियों पर मांस चढ़ाकर दिखाया कि आत्मा में जीवन जीना कैसा होता है। फिर पौलुस ने गलातियों के अध्याय 6 में हड्डियों पर मांस चढ़ाकर दिखाया कि यह कैसा दिखता है। एक और महत्वपूर्ण पाठ, और शायद सबसे परिचित पाठ जिस पर मैं चर्चा करूँगा, वह है इफिसियों का अध्याय 2 और श्लोक 8 से 10।

इफिसियों के अध्याय 2 और श्लोक 8 से 10, श्लोक 8 से शुरू करते हुए, क्योंकि यह अनुग्रह ही है कि तुम विश्वास के द्वारा उद्धार पाए हो, और यह तुम्हारी ओर से नहीं है, यह परमेश्वर का दान है, यह काम से नहीं है ताकि कोई घमंड न करे। हम यह अच्छी तरह जानते हैं, एक पाठ के रूप में हम अक्सर यह प्रदर्शित करने के लिए उपयोग करते हैं कि उद्धार मानव प्रयास से नहीं बल्कि केवल परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण कार्य से होता है, जिसका हम केवल विश्वास से जवाब देते हैं। लेकिन श्लोक 10 आगे कहता है, क्योंकि हम परमेश्वर के हैं, एनआईवी कहता है कि यह हाथ का काम है, लेकिन मुझे लगता है कि हम परमेश्वर की रचना हैं, या हम परमेश्वर के कार्य हैं, जो मसीह यीशु में अच्छे काम करने के लिए बनाए गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से तैयार किया है।

दूसरे शब्दों में, अब पॉल आगे बढ़कर कहता है कि हमें अच्छे कामों के लिए बनाया गया है। मुझे लगता है कि पॉल पुराने नियम से नई सृष्टि की कल्पना और नई सृष्टि की कल्पना की ओर इशारा कर रहा है जिसका वह अन्यत्र उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों 5, 5.17 और 18।

अब हम एक नई सृष्टि का हिस्सा हैं जिसका मतलब है अच्छे काम। हम मसीह यीशु में एक नई सृष्टि के हिस्से के रूप में बनाए गए हैं, अब मसीह यीशु में, जो एक परिवर्तित जीवन को दर्शाता है जो नई सृष्टि के फल को उत्पन्न करता है या नई सृष्टि के कार्यों को उत्पन्न करता है। इसलिए, एक नई सृष्टि से संबंधित होने से एक परिवर्तन होता है जहाँ हम फल उत्पन्न करते हैं और नई सृष्टि के जीवन को बदलते हैं।

ताकि एक बार फिर, विश्वास और अच्छे काम एक दूसरे के विपरीत न हों। हम इस पर थोड़ी देर बाद वापस आएं, लेकिन पॉल यह स्पष्ट करना चाहता है कि जो लोग मसीह में विश्वास रखते हैं वे अब एक नई सृष्टि के हैं, जो अनिवार्य रूप से एक परिवर्तित जीवन को दर्शाता है। इसलिए, वह उम्मीद करता है कि अच्छे काम उस व्यक्ति का अपरिहार्य परिणाम होंगे जो विश्वास के माध्यम से ईश्वर की कृपा से बचाया गया है, जो उन्हें अब एक नई सृष्टि में लाता है और उसमें शामिल करता है, जो नई सृष्टि के फल पैदा करने के एक परिवर्तित जीवन को दर्शाता है।

रोमियों का अध्याय 6 संभवतः आज्ञाकारिता को समझने और परमेश्वर के लोगों के जीवन में आज्ञाकारिता और कार्यों की भूमिका को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक है। रोमियों का अध्याय 6 वास्तव में संभवतः एक काल्पनिक आपत्ति के जवाब के रूप में शुरू होता है या यह एक वास्तविक आपत्ति हो सकती है जिसे किसी ने पौलुस के उपदेश पर उठाया था या उठा रहा था। लेकिन अध्याय 6 एक ऐसे प्रश्न से शुरू होता है जो पौलुस द्वारा अध्याय 5 में कही गई किसी बात पर आधारित आपत्ति उठाता है। और अध्याय 5 में जहाँ पौलुस आदम और मसीह की तुलना और विरोधाभास करता है, वह यह कहकर समाप्त करता है, व्यवस्था इसलिए लाई गई ताकि अपराध बढ़ सकें, लेकिन जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक बढ़ा।

तो, आप कल्पना भी कर सकते हैं कि कोई इस पर आपत्ति जता सकता है, और पॉल ने अध्याय 6 में इसकी आशा की है। खैर, अगर यह सच है, अगर जहाँ पाप बढ़ता है, वहाँ अनुग्रह और भी

अधिक बढ़ता है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं पाप करता हूँ या नहीं, क्योंकि इससे अनुग्रह और भी अधिक बढ़ जाएगा। क्योंकि पॉल ने अभी कहा कि जहाँ पाप बढ़ता है, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक बढ़ जाता है। लेकिन पॉल ने उस आपत्ति का जवाब यह पूछकर दिया कि ऐसा कैसे हो सकता है। तुम जो पाप के लिए मर चुके हो, हम अब और उसमें कैसे रह सकते हैं? दूसरे शब्दों में, पॉल को यकीन है कि यह विचार बिलकुल हास्यास्पद है।

कि ईसाई लोग अनुग्रह को बढ़ाने के लिए पाप करते रह सकते हैं या कि परमेश्वर के लोगों के जीवन में पाप महत्वहीन है क्योंकि अनुग्रह इसे संभालने और इसे ढकने के लिए पर्याप्त से अधिक है। और इसलिए, पॉल कहते हैं, आप ऐसा कुछ कैसे निष्कर्ष निकाल सकते हैं जब आप वास्तव में पाप के लिए मर चुके हैं? जब आप इसके लिए मर चुके हैं तो आप पाप में कैसे रह सकते हैं? पाप के लिए मरने का विचार फिर से यह है कि मृत्यु वह है जो परमेश्वर के लोगों के जीवन में पाप के शासन और शासन को समाप्त करने के लिए आवश्यक है। अब, जाहिर है, वे लोग जिनके लिए पॉल लिख रहे थे और हम आज के पाठक अभी भी जीवित हैं और इस समय सांस ले रहे हैं।

तो हम पूछ सकते हैं, पौलुस ऐसा कैसे कह सकता है कि तुम पाप के लिए मर गए हो। यानी, तुमने ऐसी मृत्यु का अनुभव किया है जो वर्तमान बुरे युग के शासन और तुम्हारे जीवन में पाप के शासन को समाप्त कर देती है। वह कैसे कह सकता है कि हमने मृत्यु का अनुभव किया है? खैर, वह आगे बताता है और समझाता है, यह मसीह की मृत्यु में उसके साथ एकजुट होने के कारण है।

पद 3, क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिए गए? अर्थात् विश्वास के द्वारा मसीह से जुड़कर हम पाप के लिए मर गए, क्योंकि हम उस व्यक्ति से जुड़ गए जो वास्तव में मर चुका है। जो वास्तव में, अक्षरशः और सचमुच मर गया है, जिससे मृत्यु का राज्य और वर्तमान बुरे युग का राज्य समाप्त हो गया है। हम यीशु मसीह से जुड़कर उस मृत्यु में सहभागी हुए हैं।

लेकिन पौलुस आगे कहता है कि यह पर्याप्त नहीं है कि हम मसीह की मृत्यु से जुड़ गए हैं, और इसने हमारे जीवन में मृत्यु के शासन और पुराने युग के शासन को मार दिया है। इसके बजाय, हम जीवन की नईता में चलने के लिए मसीह के पुनरुत्थान में भी उसके साथ जुड़ गए हैं। दूसरे शब्दों में, यह एक बार फिर नई सृष्टि की भाषा है।

अब हम यीशु मसीह के पुनरुत्थान से जुड़कर और एक होकर नई सृष्टि के पुनरुत्थान के अस्तित्व का अनुभव करना शुरू करते हैं, जो कि नई सृष्टि की शुरुआत है। और इसलिए, बाद में, अध्याय 12-14 में, पौलुस कहेगा, इसलिए, हम अब पाप के गुलाम नहीं हैं। यह अब हमारा स्वामी नहीं है, और हम अब खुद को पाप के गुलाम के रूप में पेश नहीं कर सकते।

इसके बजाय, एकमात्र विकल्प यह है कि हम अपने स्वामी के रूप में खुद को धार्मिकता के दास और सेवक के रूप में पेश करें। अर्थात्, मसीह में नया सृजनात्मक अस्तित्व अब सुसमाचार के बाकी हिस्सों में नैतिक उपदेशों का आधार बन गया है। हम पहले से ही पद 4 में मसीही जीवन के

लिए पौलुस के निहितार्थों को देखते हैं। मसीह के पुनरुत्थान में उसके साथ जुड़ने का मतलब है कि अब हम जीवन की नईता में चल सकते हैं।

और फिर पॉल, पद 12 से शुरू करते हुए, इसे और अधिक विस्तार से बताता है। लेकिन पूरा मुद्दा यह है कि मसीह में नया सृजनात्मक अस्तित्व, यह तथ्य कि मैं मसीह के साथ उनके पुनरुत्थान में एक हो गया हूँ, नई सृष्टि के उद्घाटन के रूप में, अध्याय के बाकी हिस्सों में पद 12 से शुरू होने वाले उपदेशों का आधार बन जाता है। इसे विद्वान अक्सर कहते हैं; चाहे आप इस भाषा का उपयोग करना चाहें या नहीं, व्याकरण की दृष्टि से, यह थोड़ा भ्रमित करने वाला है क्योंकि यह हमेशा इन लेबलों में निहित व्याकरण से सख्ती से मेल नहीं खाता है।

लेकिन विद्वान अक्सर संकेतात्मक और अनिवार्य के बारे में बात करते हैं। संकेतात्मक एक वर्णन है कि परमेश्वर ने मसीह में हमारे लिए क्या किया है। यह मसीह के साथ हमारे मिलन को संदर्भित करता है, इस तथ्य को कि हम पाप के लिए मर चुके हैं और हम उसके साथ जी उठे हैं।

अध्याय 6 में, रोमियों की आयत 6 में पॉल भी कहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व या पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर नष्ट हो जाए। फिर से, मुझे लगता है कि पुराना मनुष्यत्व और पाप का शरीर यह वर्णन करने का एक तरीका है कि मैं पुराने युग से संबंधित कौन हूँ, आदम में पुराने युग के अधिकार और शासन के अधीन, पुराने युग के प्रभाव और नियंत्रण के अधीन। अब, उसे मार दिया गया है।

इस मजबूत और स्पष्ट भाषा पर ध्यान दें। पॉल कहता है कि पुराने स्व को मार दिया गया है। वह यह नहीं कहता कि उसे थोड़ा बाधित किया गया है या उसे बाँध दिया गया है।

यह एक तरह से अप्रभावी हो गया है। नहीं, वह बहुत कठोर भाषा का उपयोग करता है। पुराना स्व, जो मैं पाप और मृत्यु के पुराने युग से संबंधित हूँ, उसके शासन और नियंत्रण में, अब मर चुका है।

यह फिर से मर गया है, इस तथ्य के कारण कि मैं मसीह की मृत्यु के साथ एक हो गया हूँ। तो यह संकेत है। वह आगे कहता है कि अब हम यीशु के स्वयं के पुनरुत्थान के नए सृजन जीवन में हिस्सा लेते हैं।

तो यह सांकेतिक है, जो यीशु मसीह से संबंधित होने और उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान में मसीह के साथ एक होने के तथ्य के आधार पर सत्य है, जो एक नई सृष्टि का उद्घाटन करता है। लेकिन यह केवल श्लोक 12 और उसके बाद के निर्देश को सक्षम और आगे बढ़ाता है ताकि निर्देशात्मक पर आधारित हो।

और सूचक अनिवार्यता की ओर ले जाता है और उसे सक्षम बनाता है। यह पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं तनाव का हिस्सा है। सूचक बताता है कि यीशु मसीह के साथ एकता में मैं कौन हूँ, इसके आधार पर पहले से ही क्या सच है।

अनिवार्य, आज्ञाएँ ज़रूरी हैं क्योंकि हम अभी भी उस स्थिति में जी रहे हैं जो अभी तक नहीं है और अंतिम परिणति की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन संकेतात्मक, मैं मसीह में कौन हूँ, मैं पाप के लिए मर चुका हूँ। मैं कौन हूँ, पुराना मनुष्य, मैं आदम में कौन हूँ, पुराने युग से संबंधित, को मार दिया गया है।

मैं मसीह के पुनरुत्थान में उसके साथ एक हो गया हूँ और मैंने उद्घाटन की गई नई सृष्टि का अनुभव किया है। यही संकेत है। यह तब सक्षम बनाता है और अनिवार्यता के लिए प्रेरणा प्रदान करता है, जो कि मेरे अभी तक के अस्तित्व में नहीं है।

फिर उसे एक परिवर्तित जीवन और आज्ञाकारिता के जीवन में जीना। इसलिए, पौलुस की नैतिकता को समझने के लिए रोमियों का अध्याय 6 बहुत महत्वपूर्ण है। जब हम इफिसियों के अध्याय 4 और आयत 20 से 32 तक जाते हैं, तो हमें कुछ ऐसा ही मिलता है।

मैं इसे पूरा नहीं पढ़ूंगा। लेकिन इफिसियों के अध्याय 4 और आयत 20 से 32 तक। मुझे लगता है कि हमें इसे उसी तरह पढ़ना चाहिए जैसा हमने रोमियों के अध्याय 6 में पढ़ा था। लेकिन इफिसियों के अध्याय 4:20 से 32 तक।

इसलिए तुममें से हर एक को झूठ बोलना छोड़कर अपने पड़ोसी से सच बोलना चाहिए, क्योंकि तुम सब एक ही शरीर के अंग हो।

अगर तुम क्रोध में हो तो पाप मत करो, क्रोध में हो तो सूर्य को अस्त मत होने दो, और शैतान को पैर जमाने मत दो। जो कोई चोरी करता आया है, उसे अब चोरी नहीं करनी चाहिए। लेकिन उन्हें अपने हाथों से कुछ उपयोगी काम करना चाहिए ताकि उनके पास ज़रूरतमंदों के साथ बाँटने के लिए कुछ हो।

अपने मुँह से कोई भी अच्छी बात न निकलने दें, बल्कि सिर्फ वही बात कहें जो मददगार हो। और हम आगे जाकर दूसरे आदेशों को भी पढ़ सकते हैं। लेकिन मैं जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि आप पीछे जाएँ और उससे पहले वाला भाग पढ़ें।

इसलिए, आयत 25 और उसके बाद के पदों में दिए गए निर्देशों पर ध्यान दें। लेकिन आयत 20 से 24 में पौलुस कहता है, "परन्तु यह वह जीवन का मार्ग नहीं है जो तुमने सीखा। जब तुमने मसीह के बारे में सुना और सत्य के अनुसार अर्थात् यीशु में उसके द्वारा सिखाए गए, तो तुम्हें अपने पिछले जीवन के बारे में सिखाया गया कि अपने पुराने मनुष्यत्व को जो अपनी पापमय अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट हो रहा है, उतार डालो, और अपने मन के स्वभाव में नये बनो, और नये स्व-सृजन को पहिन लो, कि तुम सच्ची धार्मिकता और सच्ची पवित्रता में परमेश्वर के समान बनो।

अब हम कुलुस्सियों अध्याय 3 और पद 10 और 11 में कुछ ऐसा ही देखते हैं। वास्तव में, पद 9 और 10 में। एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने अपने पुराने मनुष्यत्व को उसके कार्यों समेत उतार दिया है और नए मनुष्यत्व को पहन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने हेतु नया बनता जाता है।

अब, मैं चाहता हूँ कि आप दो बातों पर ध्यान दें। पहली बात है पुराने स्व और नए स्व की भाषा। मुझे वास्तव में पुराने आदमी और नए आदमी का अनुवाद पसंद है, इसलिए नहीं कि यह लिंग-विशिष्ट है, बल्कि इसलिए कि मुझे लगता है कि यह इस धारणा को दर्शाता है कि मैं आदम, पुराने आदमी में कौन हूँ, और मैं मसीह, नए आदमी में कौन हूँ।

इसलिए, पुराने मनुष्य और नए मनुष्य का संदर्भ, जिसे अक्सर पुराने स्व और नए स्व के रूप में अनुवादित किया जाता है, एक संदर्भ है कि मैं कौन हूँ, फिर से, वर्तमान बुरे युग के नियंत्रण में, आदम में पाप और मृत्यु के बंधन में, अब उद्धार के नए युग से संबंधित होने के विपरीत, जो मसीह यीशु में धार्मिकता, जीवन और परमेश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा विशेषता है, जो मैं मसीह में उसके अधिकार और शासन के क्षेत्र के तहत हूँ। यह सांकेतिक होगा। सांकेतिक यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने मसीह के साथ मेरे मिलन के आधार पर मेरे लिए क्या किया है।

तो फिर से, इफिसियों, इफिसियों अध्याय 4, आयत 22 और 24 में वापस जाकर, हम पाते हैं कि परमेश्वर ने क्या किया है। कुलुस्सियों 3, आयत 10 और 11 में, हम पाते हैं कि परमेश्वर ने क्या किया है। हमने पुराने मनुष्यत्व को उतार दिया है, जो मैं आदम में हूँ, जो पुराने युग और उसके व्यवहारों के शासन और नियंत्रण और क्षेत्र के अधीन है, और अब हमने नए मनुष्यत्व को पहन लिया है, जो मैं मसीह में हूँ। हमने यीशु मसीह और नए युग को पहन लिया है जिसका मैं अब मसीह यीशु में हिस्सा हूँ।

हमने एक को टाल दिया है, और हमने दूसरे को रखा है, जो इफिसियों और कुलुस्सियों दोनों में आस-पास की आज्ञाओं को जीने के लिए, आस-पास की आज्ञाओं को जीने के लिए सक्षमता और प्रेरणा प्रदान करता है। इफिसियों और कुलुस्सियों, कुलुस्सियों अध्याय 3 के बारे में ध्यान देने योग्य दूसरी बात, इफिसियों और कुलुस्सियों, इफिसियों 4 और कुलुस्सियों 3 दोनों के बारे में ध्यान देने योग्य दूसरी बात यह है कि थोड़ा अलग दिशा लेने के लिए, अधिक विशेष रूप से, यह है कि पॉल के निर्देश, उनकी नैतिकता, एक सामूहिक संदर्भ में प्रस्तुत की गई है। दूसरे शब्दों में, पॉल के लिए, विशेष रूप से इफिसियों और कुलुस्सियों में, मैं कहीं और भी तर्क दूंगा कि नैतिकता व्यक्तिगत नहीं है, लेकिन वे एक समुदाय के संदर्भ में की जाती हैं।

पौलुस के मन में सिर्फ व्यक्तियों का नवीनीकरण नहीं है, हालाँकि इसमें वह भी शामिल होगा, बल्कि पूरे समुदाय का नवीनीकरण है। और यह केवल समुदाय के संबंध में ही है कि परमेश्वर के लोगों का परिवर्तन हो सकता है। वास्तव में, जब आप इफिसियों 4 और कुलुस्सियों 3 में इन आज्ञाओं को पढ़ते हैं, तो उनमें से ज़्यादातर ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें केवल एक समुदाय के संदर्भ में ही पूरा किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, अकेले में नहीं। इसलिए, अध्याय 3 को देखें। इसलिए, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में प्रेम में पवित्र, करुणा, दयालुता, नम्रता, सौम्यता और धैर्य से खुद को सुसज्जित करें। एक दूसरे के साथ सहन करें और अगर किसी को कोई शिकायत है तो एक दूसरे को माफ करें।

जैसे प्रभु ने तुम्हें क्षमा किया है, वैसे ही क्षमा करो। इन सभी गुणों से बढ़कर प्रेम को धारण करो, जो उन सभी को पूर्ण एकता में बांधता है। मसीह की शांति को अपने हृदयों में राज करने दो।

यह मेरे जीवन में शांति, अत्यधिक शांति की भावना का संदर्भ नहीं है। लेकिन शांति, हमारे पहले के मेल-मिलाप की चर्चा के संदर्भ में, समुदाय के भीतर संघर्ष की अनुपस्थिति है। मसीह की शांति को अपने दिलों में राज करने दें।

चूँकि आप एक ही शरीर के अंग हैं, इसलिए आपको शांति के लिए बुलाया गया है। इसका मतलब है कि ईसाई समुदाय के भीतर संघर्ष, दुश्मनी, युद्ध और लड़ाई का अभाव है। और आभारी रहें।

मसीह के संदेश को अपने बीच समृद्ध रूप से रहने दें, जब आप एक दूसरे को सिखाते और चेतावनी देते हैं। अब, मेरा सवाल यह है कि आप इन चीजों को अकेले में कैसे कर सकते हैं? आप एक दूसरे को अकेले में कैसे सिखा सकते हैं और चेतावनी दे सकते हैं? आप एक दूसरे को कैसे माफ कर सकते हैं? आप करुणा कैसे प्रदर्शित कर सकते हैं? आप एक दूसरे के साथ कैसे सहन कर सकते हैं? आप एक दूसरे के साथ अकेले में कैसे शांति से रह सकते हैं? तो, ये सभी गुण हैं जो पॉल हमसे समुदाय के संदर्भ में एक दूसरे के साथ संबंध में जीने की अपेक्षा करता है। ताकि परिवर्तन न केवल व्यक्तियों के रूप में बल्कि परमेश्वर के लोगों के समुदाय, चर्च के संदर्भ में हो।

तो इस बिंदु पर पौलुस के निर्देशों, या आज्ञाकारिता और एक परिवर्तित जीवन पर उसकी नैतिकता या शिक्षा को सारांशित करने के लिए, पौलुस में, हम पाप से अलग होने के निर्देश पाते हैं, आज्ञाकारिता का अनुसरण करने के निर्देश, इस तथ्य पर आधारित हैं कि परमेश्वर के लोगों ने पहले से ही पुराने युग के पुराने स्व को त्याग दिया है, या वे पहले से ही अलग हो चुके हैं, और अब उन्होंने मसीह के साथ अपने एकता से संबंधित नए स्व, या नए मनुष्य को धारण कर लिया है और मसीह यीशु में अपने नए सृजनात्मक अस्तित्व से संबंधित हैं। ताकि नई सृष्टि पौलुस की आज्ञाओं का पालन करने के लिए परिवर्तनकारी शक्ति प्रदान करे। पुराने मनुष्य को उतार फेंकने और नए सृजनात्मक अस्तित्व को धारण करने की प्रक्रिया, बेशक, पौलुस में, कुछ ऐसी है जो अभी तक पूरी नहीं हुई है।

यह पहले से ही उस तनाव में है, लेकिन अभी तक नहीं, क्योंकि हम अभी भी इस वर्तमान बुरे युग में जी रहे हैं। हम अभी भी इन वर्तमान कमज़ोर और भ्रष्ट शरीरों में जी रहे हैं। इसलिए, तब तक, अनिवार्यताएँ और आज्ञाएँ ज़रूरी हैं।

लेकिन मसीह यीशु में हम जो नए सृजनात्मक प्राणी हैं, वे हमें एक नए सिरे से जीवन जीने के लिए प्रेरणा और सक्षमता प्रदान करते हैं, उन लोगों का जीवन जो अब यीशु मसीह के हैं, और वह नई सृष्टि जिसका उद्घाटन वह अपने पुनरुत्थान के माध्यम से करता है। इसलिए, मसीह में हम जो नए सृजनात्मक प्राणी हैं, वे लगातार नए हो रहे हैं। अगर आपको याद हो, तो कुलुस्सियों के अध्याय 3 में, पौलुस नए मनुष्य का उल्लेख करता है, जिसे हमने नया मनुष्य पहना है, जो अपने सृष्टिकर्ता की छवि में ज्ञान में नया हो रहा है।

इसलिए, मसीह में नए सृजनात्मक प्राणियों के रूप में, हम मसीह में हैं, लेकिन हम नए सृजन के रूप में लगातार जीते हुए नवीनीकृत हो रहे हैं, क्योंकि हम लगातार आज्ञाकारिता के जीवन जीते हैं जो पवित्र आत्मा में जीवन के माध्यम से नए सृजन के फल का उत्पादन करते हैं। अब मैं जो करना चाहता हूँ वह बस जेम्स का संक्षिप्त परिचय है और जेम्स की पुस्तक संभवतः नए नियम की वह पुस्तक है जो ईसाई आज्ञाकारिता और अच्छे कार्यों और ईश्वर के लोगों द्वारा किए गए अच्छे कार्यों पर सबसे अधिक ध्यान केंद्रित करती है। लेकिन एक बार फिर यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि जेम्स ने इसे किस संदर्भ में रखा है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, अध्याय 1 और श्लोक 8-22 में, कभी-कभी यह जेम्स का आज्ञाकारिता और अच्छे कार्यों पर ध्यान केंद्रित करना है, जिसने ऐतिहासिक रूप से कई ईसाइयों को इसके मूल्य पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित किया है या वे निश्चित नहीं हैं कि इसके साथ क्या करना है। मार्टिन लूथर यह कहने के लिए प्रसिद्ध हैं, जैसा कि परंपरा कहती है, कि यह एक सही स्ट्रॉपी पत्र था। यीशु मसीह और ईश्वर की कृपा में विश्वास पर पॉल के जोर के प्रकाश में उन्हें नहीं पता था कि इसके साथ क्या करना है।

फिर वह याकूब के पास आता है और पाता है कि याकूब परमेश्वर के लोगों की आज्ञाकारिता और अच्छे कामों पर जोर दे रहा है। लेकिन याकूब के अध्याय 1 और आयत 18-22 में याकूब कहता है, उसने हमें सत्य के वचन के द्वारा जन्म देना चुना ताकि हम उसकी सृष्टि के पहले फल बन सकें। इसलिए, एक बार फिर, याकूब सृष्टि की भाषा का उपयोग करता है।

हमें नया जन्म दिया गया है, और हम पहले से ही एक नई सृष्टि के सदस्य हैं। और फिर वह पद 19-20 में आगे कहता है, मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, इस बात पर ध्यान दें। हर किसी को सुनने में तत्पर, बोलने में धीमा और क्रोध करने में धीमा होना चाहिए क्योंकि मानवीय क्रोध से वह धार्मिकता उत्पन्न नहीं होती जो परमेश्वर चाहता है।

इसलिए, सभी नैतिक गंदगी और बुराई से छुटकारा पाएँ जो इतनी प्रचलित है, और विनम्रतापूर्वक उस वचन को स्वीकार करें जो आपके अंदर प्रत्यारोपित है और जो आपको बचा सकता है। दूसरे शब्दों में, याकूब के लिए भी, आज्ञाकारिता और परमेश्वर की धार्मिकता का उत्पादन एक नई सृष्टि और प्रत्यारोपित वचन के संदर्भ में है जो हमें बचाने में सक्षम है। इसलिए, याकूब के लिए भी, आज्ञाकारिता अंततः नई सृष्टि की वास्तविकता के तहत जीने का उत्पाद है और परमेश्वर के वचन की परिवर्तनकारी शक्ति द्वारा उत्पादित है।

इसलिए याकूब के लिए भी, आज्ञाकारिता ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम अपने आप जुटाते हैं, या हम अपने प्रयासों से पैदा करते हैं, बल्कि अंततः इस तथ्य का हिस्सा है कि हमें पहले से ही जन्म दिया गया है, नई सृष्टि के हिस्से के रूप में नया जन्म और परमेश्वर के वचन की परिवर्तनकारी शक्ति के तहत जीना जो हमें बचाने में सक्षम है। अब, संभवतः याकूब में सबसे दिलचस्प और महत्वपूर्ण पाठ अध्याय 2 में पाया जाता है, और यह वह है जिसे अक्सर पॉल की शिक्षा के साथ संघर्ष में देखा जाता है। इसलिए, हमारे अगले भाग में, मैं याकूब के अध्याय 2 को देखकर शुरू करना चाहता हूँ और यह पॉल की शिक्षा के संदर्भ में ईसाई आज्ञाकारिता के बारे में क्या कहता है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 28 है, ईश्वर के लोगों की आज्ञाकारिता।